6 महादेवी वर्मा

आधुनिक मीरा के नाम से प्रसिद्ध महादेवी वर्मा का जन्म 24 मार्च, 1907 ई० में होली के दिन फर्रुखाबाद (उ० प्र०) में हुआ था। इनके पिता श्री गोविन्द सहाय इन्दौर के एक कॉलेज में अध्यापक थे तथा माता सरल हृदया, धर्म-परायणा महिला थीं। महादेवी बड़ी कुशाग्रबुद्धि बालिका थीं और बचपन से ही माँ से रामायण-महाभारत की कथाएँ सुनते रहने के कारण इनके मन में साहित्य के प्रति आकर्षण उत्पन्न हो गया था। फलतः मौलिक काव्य-रचना इन्होंने बहुत छोटी आयु से आरम्भ कर दी थी। प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम० ए० करने के बाद ये प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्राचार्या हो गयीं। नौ वर्ष की छोटी उम्र में ही इनका विवाह रूपनारायण वर्मा के साथ हो गया था, किन्तु इन्हीं दिनों इनकी माता का स्वर्गवास हो गया। इनके पति डॉक्टर थे, परन्तु दाम्पत्य जीवन में इनकी रुचि नहीं थी। इनके जीवन पर महात्मा गाँधी का और कला-साहित्य साधना पर कवीन्द्र-रवीन्द्र का प्रभाव पड़ा। इन्होंने नारी स्वातन्त्र्य के लिए संघर्ष किया और अपने अधिकारों की रक्षा के लिये नारियों का शिक्षित होना आवश्यक बताया। कुछ वर्षों तक महादेवी जी उत्तर प्रदेश विधान परिषद् की मनोनीत सदस्या रहीं। दर्शन, संगीत तथा चित्रकला में इनकी विशेष अभिरुचि थी। भारत-सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' अलङ्कार से सम्मानित किया। सन् 1983 ई. में महादेवी जी को इनके काव्य ग्रंथ 'यामा' पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ और इसी वर्ष उत्तर प्रदेश सरकार ने इनको एक लाख रुपए का 'भारत भारती पुरस्कार' देकर इनकी साहित्यिक सेवाओं का सम्मान किया। ये प्रयाग महिला विद्यापीठ की उपकुलपति पद पर भी आसीन रहीं। इनका देहावसान 11 सितम्बर, 1987 ई० को हुआ।

कवयित्री-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**–24 मार्च, 1907 ई०।
- **जन्म-स्थान**–फर्रुखाबाद (उ०प्र०)।
- **पिता**–श्री गोविन्द सहाय वर्मा।
- **माता**–श्रीमती हेमरानी।
- **शिक्षा**–एम.ए. (संस्कृत)।
- **संपादन**–चाँद (पत्र)।
- **भाषा**–ब्रजभाषा व खड़ीबोली।
- **शैली**–मुक्तक, चित्र, प्रगीत, ध्वन्यात्मक, सम्बोधन, प्रश्न।
- **प्रमुख रचनाएँ**–हिमालय, मेरा परिवार, यामा, अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, सप्तपर्णा, नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्य गीत, दीपशिखा, शृंखला की कड़ियाँ, अग्निरेखा, संधिनी, परिक्रमा, प्रथम आयाम, पथ के साथी, क्षणदा, संकल्पिता, चिन्तन के क्षण।
- उ०प्र० विधान परिषद् की सदस्यता रहीं।
- **मृत्यु**–11 सितम्बर, 1987 ई०।

महादेवी जी आधुनिक हिन्दी साहित्य के निर्माताओं में महत्त्वपूर्ण स्थान की अधिकारिणी हैं। **प्रसाद, पन्त, निराला** तथा **महादेवी वर्मा–'छायावाद-युग'** के इन चार महान् कवियों को बृहत् चतुष्टय के नाम से जाना जाता है। महादेवी जी ने मैट्रिक उत्तीर्ण करने के पश्चात् ही काव्य-रचना प्रारम्भ कर दी थी। करुणा एवं भावुकता उनके व्यक्तित्व के अभिन्न अंग थे। जहाँ एक ओर इनके काव्य में इन भावनाओं की अभिव्यक्ति हुई, वहीं दूसरी ओर इनकी ये भावनाएँ सम्पर्क में आनेवाले पीड़ित एवं दुःखी व्यक्तियों को भी प्रेम एवं सहानुभूति से प्रभावित करती रहीं। इनके द्वारा रचित काव्य में रहस्यवाद, वेदना एवं सूक्ष्म अनुभूतियों के कोमल तथा मर्मस्पर्शी भाव मुखरित हुए हैं।

इनकी रचनाएँ सर्वप्रथम 'चाँद' पत्रिका में प्रकाशित हुईं। इनकी काव्यात्मक प्रतिभा के लिए 'सेकसरिया' एवं 'मंगलाप्रसाद' पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इन्हें 'ज्ञानपीठ' एवं 'भारत-भारती' पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

इनकी प्रमुख काव्य-रचनाएँ हैं—**नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्य गीत, दीपशिखा, सप्तपर्णा**, **यामा** तथा **हिमालय।** नीहार महादेवी का प्रथम काव्य-संग्रह है। इसमें 47 गीत संकलित हैं। साहित्य को इनकी देन मुख्यतया एक कवि के रूप में है किन्तु इन्होंने प्रौढ़ गद्य-लेखन द्वारा हिन्दी भाषा को सजाने-सँवारने तथा अर्थ-गाम्भीर्य प्रदान करने में जो योगदान किया है, वह भी प्रशंसनीय है।

भाषा-शैली—महादेवी जी की प्रारंभिक काव्य रचनाएँ ब्रजभाषा में हैं, किन्तु बाद में खड़ीबोली पर इन्होंने साहित्य-सृजन केन्द्रित किया। इनकी खड़ीबोली शुद्ध, मधुर और कोमल है। इसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों की अधिकता है। भाषा को मधुर और कोमल बनाने के लिए कहीं-कहीं शब्दों को परिवर्तित कर दिया गया है। सूक्ष्म भावनाओं का चित्रण होने के कारण इनकी भाषा में सांकेतिकता और संवेदनात्मकता है।

महादेवी जी ने गीतात्मक शैली में सरस गीतों की रचना की है, जिनमें वेदना की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। अपने गीतों में इन्होंने असीम, अगोचर, परोक्ष प्रिय (ईश्वर, ब्रह्म) के प्रति प्रेम का निवेदन किया है। बौद्धों के दुःखवाद तथा करुणावाद का इन पर बहुत प्रभाव था। इन्होंने अपने गीतों में स्निग्ध और सरल, तत्सम-प्रधान खड़ीबोली का प्रयोग किया है। साहित्य तथा संगीत के मणि-कांचन संयोग द्वारा 'गीत' की विधा को विकास की चरम सीमा तक पहुँचा देने का श्रेय महादेवी को ही है। कवि-हृदय लेकर और कल्पना के सप्तरंगी आकाश में बैठकर इन्होंने जिस काव्य का सृजन किया, वह स्मरणीय रहेगा।

●●

हिमालय से

हे चिर महान्!
यह स्वर्णरश्मि छू श्वेत भाल,
बरसा जाती रंगीन हास;
सेली बनता है इन्द्रधनुष,
परिमल मल मल जाता बतास!
पर रागहीन तू हिमनिधान!
नभ में गर्वित झुकता न शीश
पर अंक लिये है दीन क्षार;
मन गल जाता नत विश्व देख,
तन सह लेता है कुलिश भार!
कितने मृदु कितने कठिन प्राण!
टूटी है तेरी कब समाधि,
झंझा लौटे शत हार-हार;
बह चला दृगों से किन्तु नीर
सुनकर जलते कण की पुकार!
सुख से विरक्त दुःख में समान!
मेरे जीवन का आज मूक,
तेरी छाया से हो मिलाप;
तन तेरी साधकता छू ले,
मन ले करुणा की थाह नाप!
उर में पावस दृग में विहान!

('सान्ध्य गीत' से)

वर्षा सुन्दरी के प्रति

रूपसि तेरा घन-केश-पाश!
श्यामल श्यामल कोमल कोमल,
लहराता सुरभित केश-पाश!
नभ गंगा की रजतधार में,
धो आई क्या इन्हें रात?
कम्पित हैं तेरे सजल अंग,
सिहरा सा तन हे सद्यस्नात!

भीगी अलकों के छोरों से
चूतीं बूँदें कर विविध लास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश!

सौरभ भीना झीना गीला
लिपटा मृदु अंजन सा दुकूल;
चल अंचल में झर-झर झरते
पथ में जुगनू के स्वर्ण फूल;
दीपक से देता बार-बार
तेरा उज्ज्वल चितवन-विलास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश!

उच्छ्वसित वक्ष पर चंचल हे
बक-पाँतों का अरविन्द हार,
तेरी निश्वासें छू भू को
बन बन जातीं मलयज बयार;
केकी-रव की नूपुर-ध्वनि सुन
जगती जगती की मूक प्यास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश।

इन स्निग्ध लटों से छा दे तन
पुलकित अंकों में भर विशाल;
झुक सस्मित शीतल चुम्बन से
अंकित कर इसका मृदुल भाल;
दुलरा दे ना, बहला दे ना
यह तेरा शिशु जग है उदास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश।

('नीरजा' से)

|| अभ्यास प्रश्न ||

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए—

(क) नभ में गर्वित झुकता .... मृदु कितने कठिन प्राण! **(2019AF)**

(ख) टूटी है तेरी .... दुःख में समान। **(2020MB)**

(ग) मेरे जीवन .... दृग में विहान! **(2019AE,20MB)**

(घ) रूपसि तेरा .... घन-केश-पाश! **(2016CA)**

(ङ) सौरभ भीना .... घन-केश-पाश!

(च) उच्छ्वसित वक्ष .... मलयज बयार।

(छ) इन स्निग्ध लटों .... तेरा घन-केश-पाश। **(2017AF)**

2. महादेवी वर्मा का जीवन-परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
3. महादेवी वर्मा का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **(2016CE,CF,17AC,AG, 18HA,19AC,20ME)**
4. महादेवी वर्मा का जीवनवृत्त लिखकर उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख कीजिए।
5. महादेवी वर्मा की जीवनी का उल्लेख करते हुए उनकी रचनाओं और भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
6. 'हे चिर महान्' कविता में हिमालय के लिए कौन-कौन से विशेषण कवयित्री ने प्रयुक्त किये हैं? उनसे हिमालय के किन गुणों पर प्रकाश पड़ता है?
7. 'वर्षा-सुन्दरी के प्रति' कविता के आधार पर वर्षा का वर्णन कीजिए।
8. 'बक-पाँतों का अरविन्द हार' से कवयित्री का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।
9. 'हिमालय से' शीर्षक कविता का क्या उद्देश्य है?
10. 'हिमालय से' कविता का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए।
11. 'हिमालय से' कविता से आपको क्या प्रेरणा मिलती है? सोदाहरण लिखिए।
12. 'हिमालय से' कविता के आधार पर हिमालय के व्यक्तित्व का वर्णन कीजिए।
13. 'जगती जगती की मूक प्यास' में कौन-सा अलङ्कार है? उसकी परिभाषा तथा दो अन्य उदाहरण दीजिए।

➥ आन्तरिक मूल्यांकन

(i) महादेवी वर्मा के गद्य एवं पद्य के क्षेत्र में किये गये योगदान का उल्लेख कीजिए।

(ii) महादेवी वर्मा की रचनाओं की एक सूची तैयार कीजिए।

टिप्पणी

स्वर्ण रश्मि = सुनहरी किरण। **हास** = हँसी। **सेली** = एक प्रकार की माला, छोटा दुपट्टा। **परिमल** = सुवास, खुशबू। **बतास** = (वातास) वायु। **रागहीन** = आसक्तिरहित। **क्षार** = राख, धूल। **कुलिश** = वज्र। **झंझा** = तूफानी हवा। **दृग** = नेत्र। **पावस** = वर्षा। **थाह** = गहराई। **विरक्त** = वैरागी। **मूक** = मौन। **विहान** = सवेरा। **घन-केश-पाश** = बादलरूपी बालों का समूह, बादल में केश-राशि का आरोप होने से रूपक अलङ्कार है। **नभ गंगा** = आकाश गंगा। **रजत धार** = चाँदी जैसे शुभ्र जल की धारा। **सद्यस्नात** = तुरन्त का नहाया हुआ। **लास** = नृत्य। **अंजन** = काजल। **दुकूल** = दुपट्टा। **चल** = थरथराते हुए। **जुगनू के स्वर्ण फूल** = जुगनूरूपी सुनहरे रंग के फूल। यहाँ रूपक अलङ्कार है। **देता बार-बार** = जला देता है। **चितवन विलास** = दृष्टि की भंगिमा। **उच्छ्वसित** = जोर से खींची साँस के कारण हिलता हुआ, प्रसन्न, गद्गद। **अरविन्द** = कमल। **बक पाँतों का अरविन्द हार** = बगुलों की पंक्तिरूपी सफेद कमलों की माला है। **केकी रव** = मयूरों का शब्द। **जगती जगती की मूक प्यास** = 'जगती' के दो अर्थ हैं—(1) जाग्रत होती है, (2) संसार। यहाँ यमक अलङ्कार है। **सस्मित** = मुस्कानयुक्त। **शिशु जग** = संसार को वर्षा का शिशु माना है। यहाँ रूपक अलङ्कार है। **मृदुल** = कोमल। **भाल** = माथा, मस्तक।

●●